



तालाब मे डूबी छह लडकियाँ

विष्णु नागर



प्रकाशक

प्रकाशक संस्था

216 श्री राम नगर शाहदरा दिल्ली—110032

विद्वानु मागण

प्रथम संस्करण 1980

द्वितीय संस्करण 1980

मूल्य 15-00 रुपये

भावरण ज० स्वामीनाथन

मुद्रक तारा कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा  
विवास आर्ट प्रिंटर्स, रामनगर शाहदरा दिल्ली 110032

डॉ० दुर्गाप्रसाद भाला  
स्व० जयप्रकाश आथ  
श्रीराम जोशी  
नरेद्र गौड  
ब्रजकिशोर शर्मा  
को  
साजापुर के दिनो की स्मृति मे



## क्रम

तालाब मे डबी छह लडकियाँ	६
महापण्डित	११
हम सब	१२
मैंने सोचा	१३
हुवा मे	१४
इस बरस	१५
मीवा	१७
लडकी ने नहाया	१७
जब भी	१८
हर कबिता	१९
खालियो म	२०
उसके सोन म है व्यथा	२१
ममय	२२
हरी चिडिया का स्वप्न	२३
बपत होता जा रहा है	२४
युद्धभूमि	२५
मैं अपना अन्त नहीं देखता	२६
मडरे की मोन	२७
ज शान औरत	२८
बह जवानी मे भी रोयेगा	२९
मैं फिर कहता हूँ चिडिया	३०

अंतिम सू १	३१
सदना	३२
माँ	३३
दूगरे लपियार पुण ध	३४
वषा	३५
सदनी	३५
ढाली ढाली	३६
धर	३७
दण	३८
उपर मरी बच्ची है	३९
लगा पहाट	४०
निय	४१
मोहन मोहन	४२
पत्र	४३
शण्डा गीत	४४
रात	४५
क्षमा बोजिए	४६
रावारी गाढी	४७
साबुन	४८
नदी और बच्चा	४९
छोग लडवा	५०
दुनिया है बागज पे रची	५१
जिरह म	५२
पड	५३
मामन	५४
जगल ही बयो नही है	५५
बरस रहा है पानी	५६
तुम्हारा यह खेत	५७
साहस	५८
मुलेमान	५९
अपना आदमी	६०
रिआया	६१
पहाड	६२
इतना बचत	६३
यह कविता	६४
	६५

हुँजूर	६६
उनके फूल	६८
वह बहुत दूर है	६९
दयाराम बा	७०
यह	७२
चदि पर	७४
कोइ नही	७६
मर गये वह	७७
दुःखमन	७८
देह	८२
राजा की सवारी	८४
एक कमरा	८५
बहिन	८६
भाई की चिटठी	८८





## तालाब में डूबी छह लडकियाँ

तालाब में डूबी  
छह लडकियाँ

जवान थी जवान  
उनके भरे हुए स्तन थे  
उनके शरीर को छूते  
करुण्ट दौड़ जाता था  
वे गोल-मटोल  
जादू की पुतलियाँ थी ।

उहे मरे दो बरस हो जायेंगे ।  
पाँच और आठ और साठ  
बरस हो जायेंगे ।  
भरी पूरी  
जवान लडकियों की मौत की  
एक शताब्दी बीत जायेगी ।

ये लडकियाँ  
ऐसे ही नहीं बीतने देंगी  
ये शताब्दियाँ  
कल ही किसी के  
सपने में नगी होकर आयेंगी  
किसी के हाथ में  
दे देंगी अपना हाथ

बिगी बी तरफ

भोगें उठाकर भी नहीं देंगी

छह सड़कियाँ

छह हज़ार होकर आयेंगी

और ताताब से दूबत-दूबत

नाक न दम कर देंगी ।

छह सड़कियाँ

पिटिया बनकर आयेंगी

हरदम तिरके गिराती रहेंगी ।

छह सड़कियाँ के मरने से

बोई यह न समझे

कि वहाँ हतनी जल्दी जीत लिया गया है ।

## महापण्डित

महापण्डित जो नहीं जानते, वह मैं जानता हूँ  
मैं नहीं जानता महापण्डित क्या जानत हूँ  
और क्या क्या नहीं कहते, हम मूर्खों से  
हमारी तादाद ज्यादा है  
जबकि हमारे वस्त्र जल्दी मैले नहीं होते  
और खुशी इस बात की कि  
वे सग्रहालयों में रखे जाने के कार्मिल नहीं रहते  
जब हम उन्हें उतार फेंकते हैं।

महापण्डितों को याददास्त के लिए  
एक डायरी चाहिए  
और एक कलम लिखने के लिए  
एक बेंच टहलने के लिए  
उन्हें आलापने की आजादी चाहिए  
जमाना चाहिए सुनने को  
आराम से बठन के लिए तम्न चाहिए  
चश्मा चाहिए देखने को, पान चयान को चाहिए।  
क्या क्या चाहिए महापण्डिता को, इसकी एक फेहरिस्त है  
महापण्डिता को अश्वमेध यज्ञ करने के लिए समिधा चाहिए।  
तिल तिल कर भरें लाग  
डूबें लोग



उन्हें डूबने वालों की हँसती हुई तस्वीर चाहिए।

हम राव

हम राव जहाँ छ होत हूण जायेंगे  
वहाँ बूछ दर अपनी गठरिया रखेंगे  
तम्बाबू धायेंगे ।

हम जहाँ-जहाँ जायेंगे  
गठरिया रखेंगे  
तम्बाबू धायेंगे ।

## मैंने सोचा

मैंने सोचा तुम्हें बहुत भूख लगती होगी  
और मैंने कुछ नहीं सोचा ।

हया मे

हया म उठ गय उगमे कपड़े  
उठन दो, हया म उठ है ।

## इम बरस

अब हमे जाना जायेगा  
बहुत पानी बरसा है  
इस बरस  
हमे भुला दिया जायेगा ।



## भौका

जिनावर बहुत धे धमरे म  
मैं बहा मारो  
मारो बि यही भौका है  
मारपर पछताने वा ।

लडकी ने नहाया

लडकी ने नहाया

और पाया, सब बरोबर है

नहाना भी, नही नहाना भी ।

जय भी

जय भी हवा को बूछ बहना हाता है  
पछी चर जाते हैं ।

हर कविता

हर कविता  
पेड से गुरू  
होना चाहती है ।

कवि  
जबकि  
बम्बई में है ।

झालियों में

झालिया में  
बड़ी उत्तम  
रहते हैं  
पत्थर।

पेठ से  
बनी फल  
बनी पत्थर टपकते हैं।

उसके सोने में है व्यथा

उसके सिरहाने

माँ बठी है

उसके सोने में है व्यथा ।

समय

घूँप बजे मैं चला  
हो गया नट ।  
भँधेरे बजे मैं मरा  
मैं मरा साकेँ छह बजे साहब ने बताया ।

## हरी चिडिया का स्वप्न

मैं खीचता हूँ बई रेखाएँ  
और मौत मुझसे डर जाती है  
मैं चिडिया बनाता हूँ  
उसके पखो में हरा रंग भरता हूँ



और पंरों में बाध देता हूँ—सम्पूर्ण पृथ्वी ।

मौत को डर लगता है हाथों से,  
रगों से, आकृतियों से,  
हरी चिडिया के स्वप्न से ।



## समय

धूप बजे मैं गला  
हो गया मट ।  
अंधेर बने मैं मरा  
मैं मरा साढ़ छह बजे साहब ने बताया ।

## हरी चिड़िया का स्वप्न

मैं धीचता हूँ कई रेखाएँ  
और मौत मुझसे डर जाती है  
मैं चिड़िया बनाता हूँ  
उसके पखो में हरा रंग भरता हूँ



और पैरों में बांध देता हूँ—सम्पूर्ण पृथ्वी ।

मौत को डर लगता है हाथों से,  
रगों से, आकृतियों से,  
हरी चिड़िया के स्वप्न से ।

बधत होता जा रहा है

बधत होता जा रहा है  
और स्कूल की घण्टी बर्रा रही है।

दरवाजे—कनर की टहनियो की तरह उदार  
खुले हुए है।  
बराढे के चारो तरफ, चौकोर  
कनात तन रही है हम सब लडको की।  
आओ मरे यार, बहुत जोर से कसो मेरी ह्येली  
श्यामपट पर  
चाक से लिखने के लिए  
मुझसे अब अन्तिम उत्तर माँगा जायगा।

बधत होता जा रहा है  
और स्कूल की घण्टी बर्रा रही है।

## युद्धभूमि

अब घोड़ो को  
छोड़ दना चाहिए  
युद्धभूमि  
मनुष्यो के लिए ।

वे लड़ें  
या  
आपस में  
बाँट लें ।

घोड़ो को  
आवरण करना चाहिए  
निराला  
किसी यात्रा पर  
निकल जाना चाहिए ।

मैं अपना अंत नहीं देखता

यह, यहाँ मैं उग रहा हूँ  
वनस्पतियों की तरह  
अनजान  
इस से उस सिरे तक  
मैं अपना अंत नहीं देखता

हवा  
और धूप  
और पानी  
का रस ~~बहता~~ <sup>बहता</sup> है  
उसकी शाश्वतता  
मेरे साथ है।

हवा  
और धूप  
और पानी  
बहता है  
उसकी नश्वरता  
मेरे साथ है।

मैं अपना अंत नहीं देखता।

## लडके की मौत

वह जवान लडके का बाप था  
१८ साल में लडका जवान हुआ था  
और १८ साल वह बूढ़ा नहीं होता ।

वह जवान लडके का बाप  
क्या नाराज नहीं था  
अपने लडके से ?

जवान लडके की मौत का दिन था वह  
आकाश साफ था, रात थी तारे थे  
'समाचार' की खबरें  
क्या थी उस दिन ।

और १८ साल वह लडका बूढ़ा नहीं होता  
एक लडकी से उसकी दोस्ती थी  
वह उसे रुमाल देने वाली थी ।  
क्या काट रही थी



वह रुमाल पर इतने दिन ।

## जवान औरत

जवान औरत अधेड होना चाहती है  
उस अधेड होने पर  
फासला देकर  
दो बच्चे जनने है  
वह नहीं जानती  
मगर विज्ञापन जानता है  
उस एक लडका, एक लडकी होगी ।  
उसने दोनों के नाम  
पति से मजूर करा लिये हैं  
सस्कृत ने दिये हैं उमे य नाम ।

यह तम है  
कि उसका छोटा परिवार सुखी परिवार' होगा  
उसके बच्चा का भविष्य सुखद होगा ।

अपने बच्चो को अफसर बनता  
देखने के लिए  
जवान औरत बूढी होना चाहती है ।

जवान औरत का बस चल  
तो वह जवानी म ही बच्चे जन दे ।

वह जवानी मे भी रोयेगा

वह जब रोता है  
तो बच्चा होने से ही  
दुखी नहीं लगता है ।

वह जवानी मे भी रोयेगा—  
बासा खोकर  
तब किसी को जानने नहीं देगा  
कि वह रोया था ।



मैं फिर कहता हूँ चिड़िया

चिड़िया

मैं फिर कहता हूँ चिड़िया

अपने घासले से बड़ी है।

घोसले से बड़ी चिड़िया वा

अपना कोई मोह नहीं होता

वह दूसरे के चुगे दानो म

अपना त्याग बीनती है।

## अन्तिम वृक्ष

वह एक जगल थी  
वृक्ष कटते जा रहे थे ।

वह जान गयी  
वह जगल नहीं रहेगी  
वृक्ष कटते जा रहे थे ।

वह अन्तिम वृक्ष हो गयी  
वृक्ष कटते जा रहे थे ।

## लडका

लडका निद्वंद्व सडक पार कर रहा है  
वह मर जायेगा ।

खेल के मैदान नहीं हैं अ । र बम्बई में  
तो सडक को सडक न समझने के लिए  
लडके की मुट्ठी में पाँच पैसे हैं ।

माँ

चलें

उड़ें

मा

पख ये हैं ।

फूला स बने हैं पख ।

माँ तो उड़ती है सचमुच

पर

कितनी बिखरती है

पंखुडियाँ ।

## लडका

लडका निद्वंद्व सडक पार कर रहा है  
वह मर जायेगा ।

खेल के मैदान नहीं हैं अ । र बम्बई में  
तो सडक को सडक न समझने के लिए  
लडके की मुट्ठी में पाच पैसे हैं ।

माँ

चलें

उड़ें

माँ

पख ये हैं ।

फूलो से बने हैं पख ।

माँ तो उड़ती हैं सचमुच

पर

कितनी बिखरती हैं

पंखुडियाँ ।

दूसरे हथियार चुप थे

वह हथियारो का सेवक था  
हथियारो के मुह  
हत्या के लिए  
भुके रहते थे पृथ्वी पर ।

रोजाना की तरह  
वह बंदूक साफ कर रहा था  
और व बंदूक ने उसे  
औचक मार डाला ।

दूसरे हथियार चुप थे ।

## वक्त

दस कदम दूर से ही  
वह पहचान लिया जाता है  
दस कदम और चलेगा  
कि उसे गोली मार दी जायेगी ।

दुनिया देखने की फुमत्त उसके पास थी  
उसके पास वक्त था किनारों पढ़ने का  
पसा था उन पर खच्च करने का ।

दस कदम और उसे चलना है

दखने का इतना वक्त भी  
देख लो  
उसके लिए कम नहीं है ।



## लडकी

घूरकर देखता है लडका  
लडकी जवान हो रही है  
सोच कर देखता है लडका  
लडकी आसमान हो रही है ।

## डाली-डाली

डाली

डाली

फूल हैं ।

पीघा

अभी

गुम है ।

पीघा

अभी

गुम है जी

पीघा अभी

गुम है ।

घर

दूर  
दूर हैं  
घर ।

बहुत पास  
बहुत पास  
मगर  
उनकी परछाईया ।

## दपण

मैंने दपण म देली कविता  
जिसम लोग देखते थे  
अपने की प्रशान और सुन्दर ।

दरअसल वह उनकी कर थी ।

उधर मेरी बच्ची है

देवता जिधर दौड रहे हैं

उधर मेरी बच्ची है

कुचल, न जाये

मेरी बच्ची

वह घूल के रग मे रगी है |

## हरी पहाड़

बरसात में पहाड़ हरा था  
रात में भी हरा  
बुरे दिन आ गया है रात के।

## शिव

कोई खेती में नहीं लगा  
सिलावट का इकलौता बेटा शिव  
लोहे लगर का ठेला खीचन लगा ।

यह मेरे लंगोटिया यार की कहानी है  
शिव को मैंने दो आन किलो में  
पुराना लोहा बेचा  
बदले में उसे पहचाना नहीं ।

वह पहले की तरह  
चार आन किलो में  
लोहा नहीं खरीदता ।

मुझे पूरे एक रुपये का घाटा हुआ है  
मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा  
यह लोहा मेरे घर में दो पीड़ियों से जमा हो रहा था ।

बीस बरस से शिव याद नहीं आया था  
और बीस बरस याद नहीं आयगा—  
जब मैं औसत भारतीय की उम्र में पहुँचा ।  
लोहा तब तक जमा होगा  
शिव की याद फिर की जायगी }

शिव  
तुम्हारी याद का यह कैसा बहाना है !

## सोहन-मोहन

सोहन भूठा

बयांकि मोहन सच्चा है ।

मोहन सच्चा किमी की जेब खाली नहीं भरवाता ।

सच्चा मोहन

भूठे मोहन को बताना है

कि भूठा सोहन, सच्चा मोहन नहीं बन सकता ।

‘यार इसी बात पर बीड़ी पिलाओ’—

भूठा मोहन, सच्चे मोहन से

तग आकर कहता है ।

सच्चा मोहन, बीड़ी नहीं पिलाना

सच्चे मोहन की जेब में

बीड़ी नहीं दूआ करती ।



## फल

हम फल हैं  
पड से टपकते हैं ।

तात हमे खाते हैं  
मीठा बनाते हैं ।

आदमी खाते हैं  
मुक्ति दिलाते हैं ।

हम फल हैं  
सडने से डरते हैं ।

## भण्डा-गीत

दयामलाल गुप्त पार्षद का भण गीत  
चीक पर गाया गया ।

अतिपिगण चुन थ  
जनता गा रही थी ।

जान-जाने को हुए जब म श्री  
तो पापदजी की पीठ धरभपा गये ।

वषा का पानी चूँकि वृषि को भी  
बहुत फायदा पहुँचाता है  
इसलिए म श्री जय मच से उतरे  
तो इस दृश्य से विगलित हो  
बादल बरस पड़े ।

सभा तो विसर्जित हो चुकी थी  
मश्री जरा-जरा भीग  
और कार से फुर हो गये ।

बादल ने सोचा वरसाना भी काव्य है ।

## रात

रात थी

वह जगल भ अकेली थी

वह अलवार नहीं पडती थी

वह समझती थी जगल मे शेर रहते हैं ।

सो उस शेर से डर लग रहा था

वह अकेली रो रही थी ।

उसके शत्रु जान रहे थे

वह शेर से डरकर रो रही है

उन्होंने उसे रोने दिया ।

भोर होते होते वह जगल से भाग गयी

उसने जगल न जाने की कसम खायी

'जगल मे तो जाने कब रात हो जाती है' ।

उसे अपने शत्रुओ का आभास नहीं था

वह डर रही थी

जगल मे तो जाने कब रात हो जाती है ।

## क्षमा कीजिए

यह कविता नहीं रही

क्षमा कीजिये यह मैं आप ही म ही कह रहा हूँ

यह दरख्त है अर ।

सोचिये, दरख्त को दिखाकर कोई क्या कहेगा

सिवाय दरख्त दिखाने के ।

वाई कहेगा

तो, १९७३ में एक आदमी दरख्त देखने को कह रहा था

तो मैं कहूँगा भाई, मकान देखो मकान

कि मकान में हवा नहीं घुसती

फिर भी वह एक अदद मकान है ।

दरख्त भी है एक

पत्ते जिसके

हवा से लगातार टिलते हैं ।



## साबुन

हत्यारा नहा रहा था  
कि साबुन उसकी आँखों में घुस गया ।

हत्यारे ने साबुन फेंक दिया  
मातुन मरनेवाली चीज नहीं थी है  
हत्यारा गया और डुकुजकर को भाग लगा,

हत्यारे व खून के हाथ साबुन ने धोये ।

साबुन हत्यारे को भागे लगा  
साबुन अपनी जगह  
बनाने लगा ।



## छोटा लडका

सडक बन्नी थी  
सडका छोटा

सडका छोटा जो था  
पट्टे ने आसमान तक  
सडक बना ली ।

बोई कायदा छूट नहीं देता  
कि लडका  
आसमान तक सडक बना ले ।

लडका छोटा ही था  
कायदा उस पर चलता नहीं था ।

कायदे ने लडके को बढा होने दिया  
फिर कायदे से उसे मार दिया ।





जिरह में

जिरह में

पूर पचास आदमी एक थे  
और दस आत्मी एक  
बाई एक-एक नहीं था ।

फसले के दिन

दस भी पचास के पीछे हो लिये ।

फसला क्या करते थे —

जो पूरे साठ थे ।

उन्होंने क्षमा किया, दया की, धुडकी दी  
अन्त में वे ऊबे ।

क्या समझें किसी को वे—

वे तो पूरे साठ थे ।

## पेड

जैसे ही मैं एक पेड के पास गया  
पेड अपने तार में चुप लगा ।

मैं कह ही रहा था  
कि पेड बहुत बट रहे हैं  
और पेड थे कि खिलखिला उठ ।

दया से चिढ़े हुए हैं पेड  
हवा न भी बहे तो खिलखिलात है ।

माखन



माखन

सिय रे तरे गाँव मे—

गाय नही

भँसँ नही ।

हम तेरे गाँव मे—

फूज नही

पती नही ।

हम तेरे घर मे—

पत्नी नही

बच्चे नही ।

कायर कही, कही  
हम, तरे स्वप्न मे भी ।

६१

जंगल ही क्यों नहीं हैं

बाये चलने को कहा गया है  
इसके मायने यह हैं  
कि आप सड़क पर हैं  
जंगल में नहीं  
और सड़क पर खतरा है ।

समझ जाइय अब  
कोई कायना क्या नहीं है जंगल में ।

और सबसे बड़ी बात कि  
जंगल ही क्यों नहीं हैं ।

बरस रहा है पानी

पानी कहीं कहीं बरस रहा है  
अंगन में, घर में, आत्मा में।

मरी छोटी सी बिटिया झूम कर नहा रही है  
उसके बासा से पानी घू रहा है  
उसकी नाक पर से पानी घू रहा है  
उसकी ठोड़ी से पानी घू रहा है  
वह आत्मा तक नहा गयी है।

पानी मेरी स्त्री की भी आँसों,  
नयनों, ओठों, बानों पर ढी गया है।

पानी दिन में, रात में बरस रहा है।

तुम्हारा यह खेल

मेरे ईश्वर

तुम्हारा यह खेल



मुझसे खेला न जायगा ।

कही घोड़े रखेंगे

कही हाथी

कही ऊँट

कही पदल

शब्द कही नहीं रखेंगे ।

साहस

मैं हूँ

तुम्हारी

सबसे कीमती चीज—साहस ।

वह आदमी

दल-दल से

निकल रहा था

डूब गया ।

मैं उसी का

स्मारक हूँ ।



## मुलेमान

अब हमारा ही देश देखो  
उसमे सबके लिए बपड़े नहीं  
मगर सबके लिए दर्जी हैं ।

पड़ोस का मुलेमान  
जा सकता है  
कालू दर्जी के पास,  
नहीं तो अपन ही नाम के दर्जी के पास ।

दर्जियों की कमी नहीं है ।

मुलेमान की हक है  
दूतार मुलेमान के पास जान का  
उससे अपन बपड़ सिलवाने का ।

पर मुलेमान क्या पागत है ?  
क्या उस आदत है  
बपड़े पहनन की  
मुनेमान भूछा है भूछा  
चाहे दर्जी ही मुलेमान कीई ।

## अपना आदमी

बाटा का पिता हुआ जूता पहने  
यह आदमी अपना है ।  
इसके घर जाने की जरूरत नहीं  
यह खुद जहाँ कहो वहाँ मिलेगा ।  
दौड़ता आता सड़क दर सड़क  
बमा से, कारो से, डरो से बचकर ।

तीनो लोक की खबर देता  
यह आदमी  
छिला हुआ अण्डा है बेचारा  
इसे गडप गडप खा जाओ ।

## रिआया

जूनागढ रियासत का एक दीवान  
पटाखे चलाता हुआ दीखता है  
रिआया हृष व्यक्त करती है ।

जूनागढ रियासत का वही दीवान  
बदूक तानता दीखता है  
रिआया हृष व्यक्त करती है ।

काम दिया रिआया को हृष व्यक्त करने का  
काम दिया रिआया को गम ओढने का ।

## पहाड

तब मरे लिए पहाड परिचित नही थे  
तब मुझे पहाडो की रात की  
कल्पना भी नही थी ।  
फिर भी मैं दुखी था—पहाडो के लिए ।

पहाड अब मेरे अनकरीब हैं  
मगर उनसे टकराते बादल नही हैं ।

अब मैं बादला मे अपना सर  
झुबाना चाहता हूँ  
और पहाडो पर रात का होना  
भूल गया हूँ ।

## इतना वक्त

रामलाल हँसते हँसते चक गया  
रामलाल हँसने से डरा  
रामलाल हँसने से कभी नहीं डरा था ।

रामलाल से भूल हुई  
रामलाल को हँसने से  
डरने में इतना वक्त लग गया ।

इतना वक्त  
आदमी को  
बना देता है  
हरा भरा पेड  
उसकी डारो पर  
झूने लगते हैं पछी  
एतना वक्त  
पेड को बना देता है  
विश्वसनीय ।

रामलाल हँसने से कब तक डरा रह सकता है ।

## यह कविता

पूण है यह कविता ओर पूरा हूँ मैं /  
मेरे बचपु/मेरे आत्मज/मेरे पचा/  
पूण है कविता मे मरे साने का दणन  
पूण है ।

पूण है गुण्य जैसी, पूण जसी, साधा जमी  
यह लरकी

पूण है इमका टिमटिमाता प्यार ।  
पूण है मौन्य साबुन  
उमग नहाने वाला मैं / मेरी बीबी / मरे बच्चे /  
मेरा देश महान ।

पूण है धर्मोद के साथ कपर लचकानी  
आती  
अभिननी  
जो सपने में मरी होगी ।

पूण ही पूण है मेरी मार खायी हुई हँसी  
जो तुम्हारी हँसी की प्रतीक्षा करती है ।

## हुजर

हुजूर चले पाव-पाँव  
उनका घोडा शरमा गया  
उनके चारूँआवाक रह गये  
उनकी पत्नी को विपाद हुआ ।

चलते चलत हुजूर को मालूम हुआ  
उनकी चाल मे नुस है  
हुजूर को मालूम हुआ  
उनकी पतलून ठीक नही सिली है ।  
हुजूर को मालूम हुआ  
हुजूर का पैदल चलता  
लोगा को मालूम है ।

हुजूर ने सोचा  
अब वे रोग रोज पैदल चलेंगे  
हुजूर हुजूर नही रहेंगे  
हुजूर खजूर भी खाऊँगे ।  
हुजूर ने फँसला लागू किया  
हुजूर ने चाल ठीक की  
हुजूर ने नयी पट मिलवायी ।

हुजूर तन्हीली चाहन तग  
जसे पतलून बे बजाय पायजामा  
पायजामे की बजाय धाती ।

हुजूर एग दिन रेत पाय मय  
हुजूर को सत्त्वना मिली कि  
हुजूर का घोडा भी रो रहा था  
हुजूर के चाकर भी रो रहे थ  
हुजूर की पत्नी<sup>भी</sup> रो रही थी ।



## उनके फूल

उनके फूल हमारे फूला स ज्यादा बड़े हैं मोहक हैं  
उनके फूल हमारी बातचीत का विषय हैं  
हालाकि हम उनके फूलों को तोड़ते नहीं ।

उनके फल समय पर फूलदाना म सज जाते हैं  
फूलदाना से हट जाते हैं ।  
फूलदानों के बारे में हमारी राय अच्छी है  
वेशकीमती फूलदानों को हम हिलाते भी नहीं  
फूलों के बारे में भी हम नेक इरादे रखते हैं  
उन्हें सूघते हैं तो उन्हें देखते हैं तो  
कि एक दिन फिर हम फूलों के बारे में  
सोचने का साहस करेंगे ।

उनके फूल हमारे फूलों को बुलाते हैं, आओ  
एकज में हमारे फल शरमाकर हँस दते हैं  
हमारे फूलों को मुस्कुराने की ~~तक~~ <sup>तरुनीक</sup> नहीं आती ।

कैसे है हमारे फल मौसम का ज्ञान भी नहीं रखते  
कभी भी खिल जाते हैं कभी भी मुरझा जाते हैं  
न जान कब तक डालों पर लदे रहते हैं ।

हमारे फूलों के बारे में प्रसिद्ध है कि वे बिक जाते हैं  
हमारे फूल तितलियों से पराम ले जान का मना  
करते हैं ।

हमारे फूल अविनाश हैं  
हमारे फूल हैं कि हमारे फूल बने रहते हैं ।

वह बहुत दूर

वह बहुत दूर है  
कहीं से भी बहुत दूर  
मगर पक्षी पर ।

वह दूर ही दूर  
हाती जायगी  
इसी पक्षी पर  
इसी आकाश में ।

उसके पर का रंग उड़ता होगा  
इसी घुप में  
ठण्ड लगने पर बछ्नी होगी वह  
इसी घुप में ।

वह बहुत दूर है  
कहीं से भी बहुत दूर ।

## दयाराम बाँ

जब दयाराम बाँ के दाहिने पर का जूता खो जाता  
तो वह इन्दिरा गाँधी का गाली दने लगते  
उह पता नहीं इन्दिरा गाँधी दग का  
प्रधानमंत्री हैं



और उहाने तो क्या, उनकी सात पुस्तो ने भी  
जूते जसी छोटी चीज चुराने का काम  
क्या किया होगा ।

बार बार कोई क्या गाली दे  
इसलिए व नगे पर ही घुमा लग ।  
उहोने सोचा  
अब मेरा कोई क्या उखाड लेगा  
मेरे पर मे जूता ही नहीं है,  
काइ पर ता काटकर नहीं ही ले जायगा ।

यह सोचत हैं कि दखते देखते  
उनकी टोपी उडकर आम की डाल पर बैठ जाती है  
और कूकने लगती है  
'दयाराम बाँ, दयाराम बाँ  
नगे रहो और करो मजा ।  
फिर बुर्ता उड जाता है  
घोती भी नहीं ठहरती और उड जाती है ।  
अब तो दयाराम बाँ को शम ही आ जाती है

क्या करें, क्या न करें सोच में न पड़ कर  
वे सावजनिक शौचालय में घुस जाते हैं ।

कोई कोई सोचता है कि नंगे आदमी के  
सावजनिक शौचालय में  
घुस जाने के पीछे भी पडयत्र है ।

पडयत्र को पुलिस नहीं दबा सकती  
इसलिए सेना आती है  
और सेना भी बड़ी मजेदार  
पूछो पानी की तो दनाक से गोली मार द ।

आखिर दयाराम वा भी मारे गये  
मगर पछतावा हुआ बेचारी सेना को  
क्यो बुलाया, क्यो बुलाया सेना को  
अगर एक ही आदमी को मारना था ।

वह

वह कपडे धोन क साबुन से नहाता है  
उसी स कपडे धोता है  
किसी ने इससे क्या आपत्ति है ?  
लेकिन है  
दुनिया म ऐस लोग भी हैं  
जिहे आपत्ति है ।

आपत्ति हो तो हो  
ठीक है  
वह नही पियेगा मशीन का ठडा पानी  
प्याऊ का पियेगा  
वह आममान देखेगा  
जमीन म चमकती चीज को  
उठायेगा उसे परखेगा ।  
उसे हवलदार का टोप  
दिखाई देगा तो  
आगे चलकर  
वह गदन भटका देगा ।  
वह गली-गली मे चलेगा  
सडक पर नहीं आयगा ।

वह कपड़े धोने का साबुन भी  
छोड़ देगा ।

वह दिवाला पिटवा देगा

एक दिन

साबुन भी,

तेल भी,

इत्र-फुलेल की कपनियाँ का ।

मारकर देखो

उस आदमी को

किस फूर्ती से

मुड़ गया

वह दूसरी गली में ।

## चाँद पर

मैं अपनी मर्जी से चाँद पर गया  
अपनी ही मर्जी से लौट आया  
अपनी ही मर्जी से फूलमालाएँ पहनी  
और फिर पत्रकार बन बैठा ।

चाँद पर फुसत मिली  
तो कान का मैल निकाला ।

सबने कहा  
चाँद पर गये  
और कान का मैल निकालने बठ गये  
छि छि छि !

मैं अपनी मर्जी से चाँद पर गया  
मर्जी से यहाँ आया  
मर्जी से सारे काम करता हूँ  
मेरी मर्जी चाँद पर  
कान का मैल निकालने की हुई तो निकाला  
मेरी मर्जी हाँ तो चाँद की मिट्टी के टुकड़े  
लाऊँ  
न लाऊँ  
मेरी मर्जी हो तो चाँद से पृथ्वी के लिए  
बोल्नूँ  
न बोलूँ

हिलता डुलता हू तो अपन लिए  
गाऊँ तो गुना  
न गाऊँ तो मबली मारो ।  
सब कहते हैं चाँद पर गया  
तो पृथ्वी क लिए लेता आता कुछ ।  
अरे मैं मर्जी स चाँद पर गया था  
नहीं लाया कुछ ।  
बर्खा मेल ही निकाला  
कुछ किया तो  
कुछ करता तो हूँ  
चाँद पर भी गया तो कुछ किया ।  
पृथ्वी पर ही कितने लोग  
कान का मेल निकालते हैं ।  
मैंन चाँद पर किया तो बुरा किया क्या ?



कोई नहीं है

हमने बेहिसाब लोगो से बेहिसाब तक बिये  
और अब हम लोट रह हैं

घरा म

जिनमे फिर सीढियाँ हैं

जूता, जूते की जगह

किताबें, किताबो की जगह हैं ।

कोई नहीं है, इन चीजो को छून,

छेडने वाला ।

मर गये वे

मर गये व

जसे बाप मरे थे

जैसे बाप वे मरने से दुनिया का तारोतार

बदस्तूर रहा था

भंडा भुजाने की नौबत नहीं आयी थी ।

मर गये तो जसे किसी ने कहा

आइदमी मर जाने के लिए बना है ।

मरे तो

कम से कम

अपने बिस्तर पर मरते

लेकिन कुत्ते की मौत मरे सड़क पर

और वह भी दिल्ली की

और वह भी दिसम्बर में !

## दुश्मन

उस आदमी न रोटी के लिए  
साइकिल चलायी  
उसने साइकिल रोकी, धीमी की  
घण्टी बजाई  
वह घर पहुँच गया ।

उगन साइकिल रोकी, धीमी की  
सर्राटि स चलायी, घण्टी बजायी  
वह बाम पर पहुँच गया ।  
उसने दोना ही बार  
लोगो, लालबत्तियो कुत्ता, हाथ ठेला,  
बसो, बिजली के खभा को देखा—  
इतना देखा कि घर और दफतर  
पहुँच गया ।



वह देखा वह रोगी के लिए नहीं भीकना  
वह दफतर नहीं जाता, घर नहीं पहुँचता  
वह बाजार म नहीं दीखता  
उमे गुजरात प्रधानमंत्री मुखमरी  
मानसून महामारी एटम बम तीसरी दुनिया  
माक्स  
सत्रकी खबर है  
और किसी मे डर नहीं है ।

उसे तुम किसी दु ख से दु खी  
नही कर सकते ।

फिर भी वह सबका है  
सबके साथ होता है ।

उस शपथ ग्रहण सामारोह के बाद शोक सभा मे  
शोकसभा के बाद बायकारिणी परिषद की बैठक मे  
बैठक के बाद अदालत मे  
अदालत के बाद परिहास मे  
लदन मे, स्वप्न मे  
वह जहाँ चाहे, उसे देगोगे ।

उमकी कार को गुजरता हुआ देखोगे  
देखोगे कि उममे वह नही उसका दोफर है  
उसके कपडे सिलते हुए नही देखोगे  
उसके लिए कपडे बिकत हुए नही देखोगे ।

□

वह कही रुकता नही

(वह साइकिलवाले आदमी की तरह नही है)

मगर वह तुम्हारा नाम जानता है  
एक दिन तुम चकित रह जाते हो  
कि वह —वही तुम्हारे घर आया ।  
तुम्हारे बच्चे मिठाई लेने दौड़े  
घफ लेने, पान लेने दौड़े  
और वे आते कि

तुम्हारा मेहमान चला ~~अच्छा~~ 2/2/11  
उसने पानी भी नही मया (पिये)  
सॉप भी नही खाई

फिर तुमम गम खाया, मिठाई खाऊ,  
गरबत पिया,  
बगो की किलवार मुनी  
और उस रात तुम खून रोय

□

वह साइकिलवाला से अलग है  
उसकी पत्नी शाम को बगडे समेटत हुए  
नहीं बहती, चलो शाम हुई, रोटी बनायें ।

□

वह साइकिलवाला से अलग है  
वह मठक पर चलने वाला से अलग है  
वह सरकार से अलग है  
वह हरिजनो की हिंसा के  
'छोटे मोटे' कामा म नहीं पढता ।  
वह हर उस घात के पक्ष म  
बयान देता है  
जिसके पक्ष में तुम लड रहे हो  
तुम किश्ता भूमया को बचाना चाहत हो  
और 'व्यक्तिगत हिंसा' के विरोध म हो  
वह तुम्हारे साथ है  
वह अदालत मे मंत्री और सठ का है  
मच पर तुम्हारा है ।

□

वह जयप्रकाश का समर्थक है  
वह इन्दिरा गांधी को बचाता है  
वह सर्वोच्च न्यायालय की सत्ता पर  
आँच नहीं आने देना चाहता ।

□

वह भूख गरीबी जलानत गगी र  
श्रिकल्प गुझाता है

उस तुम हिमा की किसी वारदान ग  
 फँसा हुआ नहीं पाआग  
 उसे तुम किसी जदालत मे दोपी  
 नहीं पाओगे  
 वह विरोध वा वारण नहीं है  
 वह प्रगतिन के हर माग पर अगुआ है  
 उसने हर सत्ता  
 और हर विपक्ष के लिए  
 अपने को जरूरी बना लिया है।  
 उस पर ऊगली उठाने वाला  
 किसी जनतंत्र म पैदा नहीं होता।  
 वह साइकिचवाले, पुलिम, सठ सम्पादक  
 मन्वार, तस्कर, नक्सलवादी  
 सबके पक्ष मे है  
 और सबको धता बता रहा है।  
 उम मारने के लिए जमीदारो को  
 गस्त्र नहीं दिय जात  
 पुलिस की मदद नहीं ली जाती।  
 वह किसी का नायक नहीं है  
 वह किसी के अध्ययन का विषय नहीं है  
 वह हम आलू के परौंठे की तरह खा रहा है  
 कोकाकोला की तरह पी रहा है  
 उस किस तक से बताऊ कि वह  
 मेरा दुश्मन है  
 जब कि वह मेरा दुश्मन है।

देह

हमारी देह बढ़ती जाती है  
हमारी देह वरगद हो जायेगी  
तो रात को उधर से गुजरने से बच्चे डरेंगे ।

हमारी देह का स्वाद कसा होगा !  
कसा होगा हम तो नहीं जानते  
क्या वह दूसरो से अभिन नहीं होगा ?  
हमारी देह वरगद हो जायेगी  
बड्डी होगी तब  
और ज्यादा बोलेगी ।

उस देह में आत्मा नहीं होगी  
वह होगी दूसरो में  
जिनकी बातों से वह झरेगी  
वह होगी भारी  
रासलीला नहीं करेगी ।  
वह सम्मोहित करेगी !  
दूसरो की देह का स्पर्दन  
जानगा यह ।

अपनी देह पर  
मीचते मोचते हम  
अपनी देह को पुरस्कृत करते जाते हैं ।  
कोई पूछता नहीं हमारी देह के बारे में  
जो जखरश हमारी है

जो बरगद होगी

बच्चे डरेंगे जिस देखकर ।

मुयासित हमारी देह कोई सूघता नहीं

वहाँ रोपें इस देह को जो बरगद होगी ।

बरगद नहीं होगी इस तरह



हमारी देह

दूसरा स छुई नहीं जाती वर—

वह बरगद नहीं होगी ।



## राजा की सवारी

भटपट नहा

पपड़े बदल

राजा की सवारी आयगी ।

वान रख बन्द

भाँखें खोल

राजा भाषण करेंगे

फुर्ती से उठ

चूतड़ झाड़

राजा प्रस्थान करेंगे ।

सबसे कह

सबसे झगड़

राजा अच्छा बोले ।

एक कमरा

एक कमरा

एक घर है

और क्या हुआ कि

एक कमरे को

पूरा घर होना पड़ रहा है ।

और घर में

यह नहीं है, वह नहीं है

यहां तक की बच्चा भी

अभी घर में नहीं है ।

यह घर

बहुत से घरों के बीच है

और बिल्कुल नजदीक है

यहाँ से ।

## बहिन

फिर क्या हाता है ?

फिर मगी बहिन घर स भाग जाती है

न लोग वाली बहिन मेरी नहीं थी

यह लोटी ही

घर का झाडा-बुहाग

ए

इस गार/बुहारने म R

यह विकलता नहीं थी, जो थी ।

उसने आटे के डिब्बे को

दाल के डिब्बे के पास रखा

उसने डिब्बे खोलकर नहीं देखा

कि उनमें कितना आटा दाल है ।

बहुत हुआ तो उसने छोटू को

स्कूल के लिए

तैयार करते समय

पहले की तरफ हल्की चपत लगा दी

क्या छोटू इस व्यापार को

समझते हुए

स्कूल गया ?

मैं अपनी बीस बरस पुरानी  
स्मृति या म लोटता हुआ  
कहता हूँ, हाँ  
कहता हूँ नहीं, अभी जब उसे  
उछलता हुआ जाता हूँ ।

न लोटने वाली बहिन मेरी नहीं थी  
वह होती  
वह होती जरूर ।

## भाई की चिट्ठी

भाई ने लिखी चिट्ठी,  
लिखा आना  
आना कि इस बार  
बहिन भी आ रही है  
आना तो खूब मजा रहगा ।  
गाँव स भाई कह आना  
ता में बयो न जाऊँ

मैं आऊँगा भाई  
सोचना मत कि कस आऊँगा ।  
८०० मील दूरी भी  
बीडी पीते पार हो जायेगी  
बीडी फिर भी न होगी खत्म ।





